



Avishek kumar

18 Jun 1997

09:45 AM

Ranchi

Model: Web-MyKundli

Order No: 121798701

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 18/06/1997
दिन _____: बुधवार
जन्म समय _____: 09:45:00 घंटे
इष्ट _____: 11:45:36 घटी
स्थान _____: Ranchi
राज्य _____: Bihar
देश _____: India

अक्षांश _____: 23:22:00 उत्तर
रेखांश _____: 85:20:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: 00:11:20 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 09:56:20 घंटे
वेलान्तर _____: -00:01:03 घंटे
साम्पातिक काल _____: 03:42:07 घंटे
सूर्योदय _____: 05:02:45 घंटे
सूर्यास्त _____: 18:36:46 घंटे
दिनमान _____: 13:34:00 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल) _____: उत्तर
ऋतु _____: ग्रीष्म
सूर्य के अंश _____: 03:09:17 मिथुन
लग्न के अंश _____: 04:48:27 सिंह

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: सिंह - सूर्य
राशि-स्वामी _____: तुला - शुक्र
नक्षत्र-चरण _____: विशाखा - 3
नक्षत्र स्वामी _____: गुरु
योग _____: सिद्ध
करण _____: कौलव
गण _____: राक्षस
योनि _____: व्याघ्र
नाड़ी _____: अन्त्य
वर्ण _____: शूद्र
वश्य _____: मानव
वर्ग _____: सर्प
युँजा _____: मध्य
हंसक _____: वायु
जन्म नामाक्षर _____: ते-तेजवन्त
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: ताम्र - ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: मिथुन

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1919	ज्येष्ठ	28
पंजाबी	संवत : 2054	आषाढ़	5
बंगाली	सन् : 1404	आषाढ़	3
तमिल	संवत : 2054	आनी	4
केरल	कोल्लम : 1172	मिथुनम	4
नेपाली	संवत : 2054	आषाढ़	4
चैत्रादि	संवत : 2054	ज्येष्ठ	शुक्ल 13
कार्तिकादि	संवत : 2054	ज्येष्ठ	शुक्ल 13

पंचांग

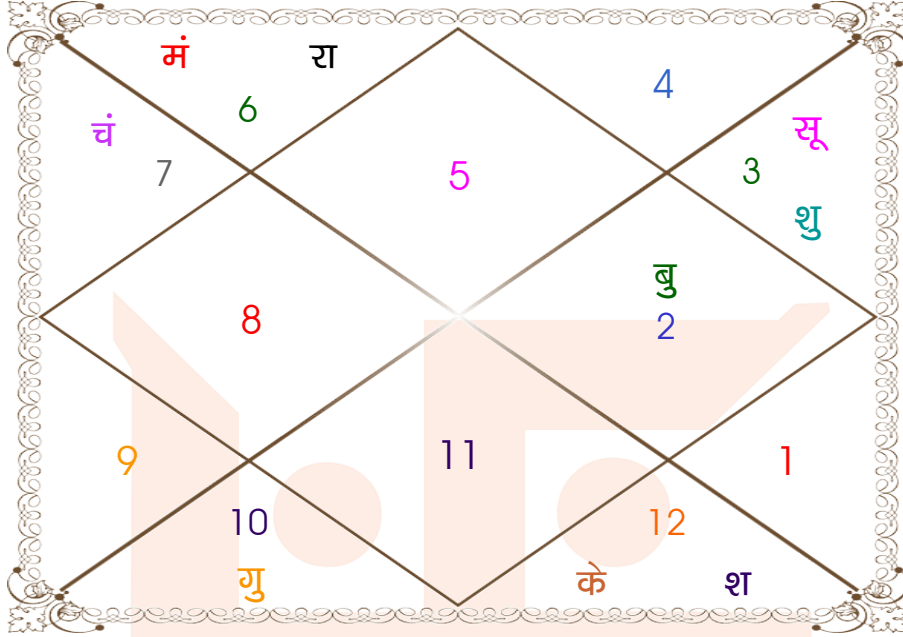
सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 13
तिथि समाप्ति काल _____ : 27:45:45
जन्म तिथि _____ : 13
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : विशाखा
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 16:01:02 घंटे
जन्म योग _____ : विशाखा
सूर्योदय कालीन योग _____ : सिद्ध
योग समाप्ति काल _____ : 21:30:28 घंटे
जन्म योग _____ : सिद्ध
सूर्योदय कालीन करण _____ : कौलव
करण समाप्ति काल _____ : 16:09:17 घंटे
जन्म करण _____ : कौलव
भयात _____ : 45:33:47
भभोग _____ : 61:13:51
भोग्य दशा काल _____ : गुरु 4 वर्ष 1 मा 20 दि

घात चक्र

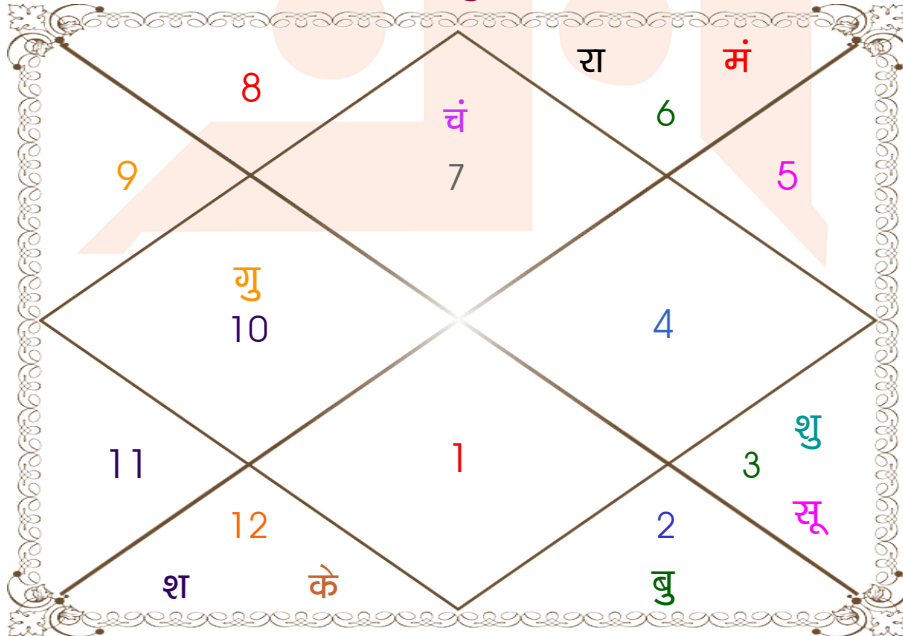
मास _____ : माघ
तिथि _____ : 4-9-14
दिन _____ : गुरुवार
नक्षत्र _____ : शतभिषा
योग _____ : शुक्ल
करण _____ : तैतिल
प्रहर _____ : 4
वर्ग _____ : गरुड़
लग्न _____ : कन्या
सूर्य _____ : कन्या
चन्द्र _____ : धनु
मंगल _____ : तुला
बुध _____ : कर्क
गुरु _____ : वृश्चिक
शुक्र _____ : धनु
शनि _____ : सिंह
राहु _____ : मकर

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुण्डली

के श		बु	सू शु
गु			ल
		चं	रा मं

लग्न कुण्डली

	बु	के श
शु सू		
		गु
ल	मं रा	चं

विंशोत्तरी
गुरु 4वर्ष 1मा 20दि
गुरु

18/06/1997

09/08/2105

गुरु	08/08/2001
शनि	08/08/2020
बुध	08/08/2037
केतु	08/08/2044
शुक्र	08/08/2064
सूर्य	08/08/2070
चन्द्र	08/08/2080
मंगल	09/08/2087
राहु	09/08/2105

योगिनी
धान्या 0वर्ष 9मा 9दि
संकटा

28/03/2020

28/03/2028

संकटा	06/01/2022
मंगला	28/03/2022
पिंगला	07/09/2022
धान्या	08/05/2023
भामरी	28/03/2024
भद्रिका	08/05/2025
उल्का	07/09/2026
सिद्धा	28/03/2028

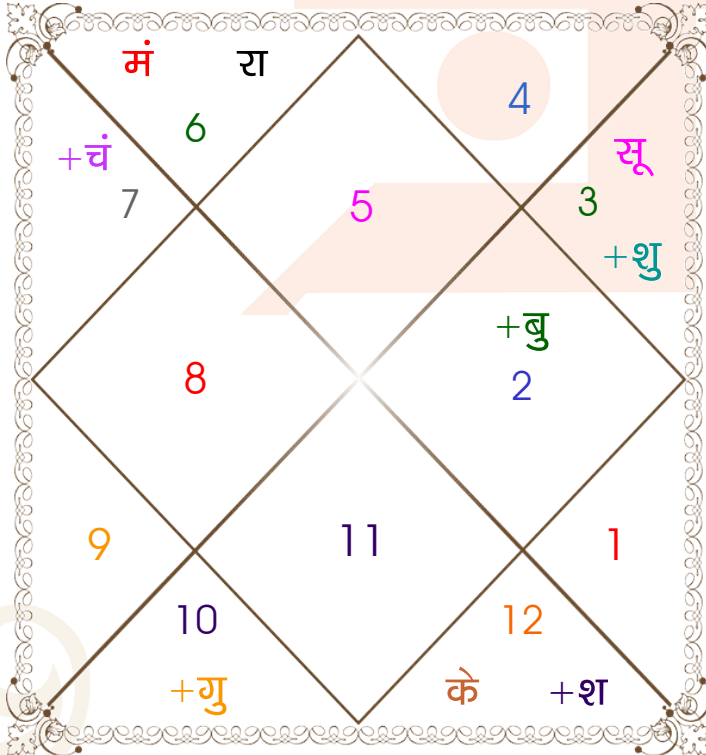
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			सिंह	04:48:27	323:32:50	मघा	2	10	सूर्य	केतु	मंगल	---
सूर्य			मिथु	03:09:17	00:57:15	मृगशिरा	3	5	बुध	मंगल	शुक्र	सम राशि
चंद्र			तुला	29:52:59	13:09:42	विशाखा	3	16	शुक्र	गुरु	चंद्र	सम राशि
मंगल			कन्या	05:40:16	00:25:43	उ०फाल्गुनी	3	12	बुध	सूर्य	बुध	शत्रु राशि
बुध	अ		वृष	23:56:35	02:05:36	मृगशिरा	1	5	शुक्र	मंगल	मंगल	मित्र राशि
गुरु	व		मक	28:00:48	00:01:33	धनिष्ठा	2	23	शनि	मंगल	शनि	नीच राशि
शुक्र			मिथु	23:16:35	01:13:09	पुनर्वसु	1	7	बुध	गुरु	शनि	मित्र राशि
शनि			मीन	24:54:07	00:04:14	रेवती	3	27	गुरु	बुध	राहु	सम राशि
राहु	व		कन्या	00:18:29	00:09:06	उ०फाल्गुनी	2	12	बुध	सूर्य	राहु	मूलत्रिकोण
केतु	व		मीन	00:18:29	00:09:06	पू०भाद्रपद	4	25	गुरु	गुरु	चंद्र	मूलत्रिकोण
हर्ष	व		मक	14:20:57	00:01:36	श्रवण	2	22	शनि	चंद्र	गुरु	---
नेप	व		मक	05:34:58	00:01:18	उत्तराषाढा	3	21	शनि	सूर्य	बुध	---
प्लूटो	व		वृश्चि	09:46:50	00:01:28	अनुराधा	2	17	मंगल	शनि	शुक्र	---
दशम भाव			वृष	03:58:27	--	कृतिका	--	3	शुक्र	सूर्य	शनि	--

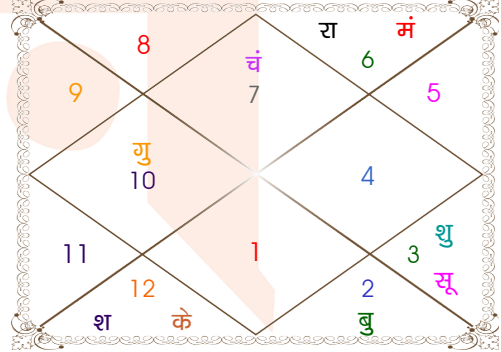
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:49:16

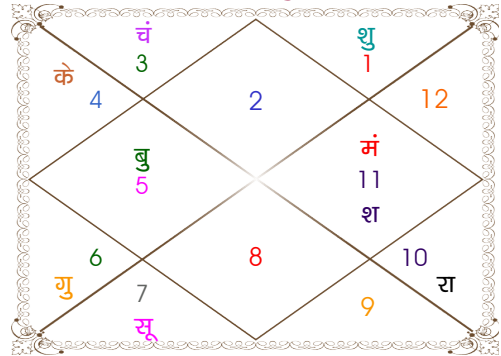
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	कर्क 19:40:07	सिंह 04:48:27
2	सिंह 19:40:07	कन्या 04:31:47
3	कन्या 19:23:27	तुला 04:15:07
4	तुला 19:06:47	वृश्चिक 03:58:27
5	वृश्चिक 19:06:47	धनु 04:15:07
6	धनु 19:23:27	मकर 04:31:47
7	मकर 19:40:07	कुम्भ 04:48:27
8	कुम्भ 19:40:07	मीन 04:31:47
9	मीन 19:23:27	मेष 04:15:07
10	मेष 19:06:47	वृष 03:58:27
11	वृष 19:06:47	मिथुन 04:15:07
12	मिथुन 19:23:27	कर्क 04:31:47

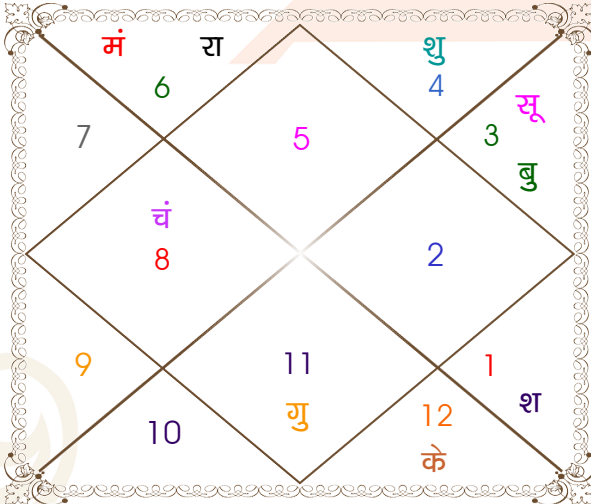
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	सिंह	04:48:27
2	कन्या	01:50:55
3	तुला	02:08:19
4	वृश्चिक	03:58:27
5	धनु	05:22:46
6	मकर	05:39:59
7	कुम्भ	04:48:27
8	मीन	01:50:55
9	मेष	02:08:19
10	वृष	03:58:27
11	मिथुन	05:22:46
12	कर्क	05:39:59

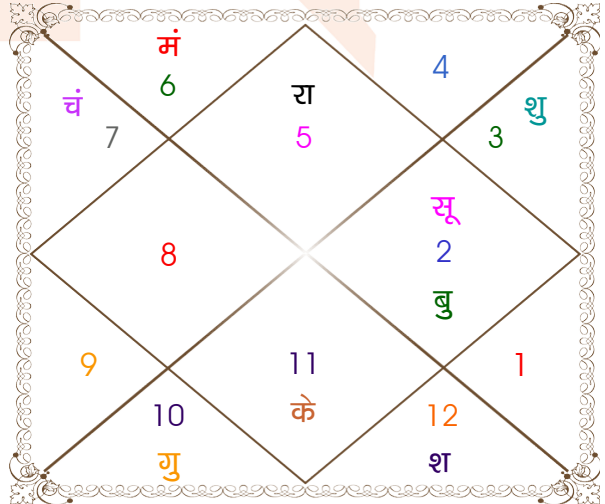
तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा
पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा
पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति

चलित कुंडली



भाव कुंडली



विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : गुरु 4 वर्ष 1 मास 20 दिन

गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष
18/06/1997	08/08/2001	08/08/2020	08/08/2037	08/08/2044
08/08/2001	08/08/2020	08/08/2037	08/08/2044	08/08/2064
00/00/0000	शनि 11/08/2004	बुध 05/01/2023	केतु 04/01/2038	शुक्र 08/12/2047
00/00/0000	बुध 21/04/2007	केतु 02/01/2024	शुक्र 06/03/2039	सूर्य 08/12/2048
00/00/0000	केतु 30/05/2008	शुक्र 02/11/2026	सूर्य 12/07/2039	चंद्र 08/08/2050
00/00/0000	शुक्र 31/07/2011	सूर्य 08/09/2027	चंद्र 10/02/2040	मंगल 09/10/2051
00/00/0000	सूर्य 11/07/2012	चंद्र 07/02/2029	मंगल 08/07/2040	राहु 08/10/2054
18/06/1997	चंद्र 10/02/2014	मंगल 04/02/2030	राहु 27/07/2041	गुरु 08/06/2057
चंद्र 09/04/1998	मंगल 22/03/2015	राहु 23/08/2032	गुरु 03/07/2042	शनि 08/08/2060
मंगल 16/03/1999	राहु 26/01/2018	गुरु 29/11/2034	शनि 12/08/2043	बुध 09/06/2063
राहु 08/08/2001	गुरु 08/08/2020	शनि 08/08/2037	बुध 08/08/2044	केतु 08/08/2064

सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष
08/08/2064	08/08/2070	08/08/2080	09/08/2087	09/08/2105
08/08/2070	08/08/2080	09/08/2087	09/08/2105	00/00/0000
सूर्य 25/11/2064	चंद्र 09/06/2071	मंगल 04/01/2081	राहु 21/04/2090	गुरु 27/09/2107
चंद्र 27/05/2065	मंगल 08/01/2072	राहु 23/01/2082	गुरु 13/09/2092	शनि 10/04/2110
मंगल 02/10/2065	राहु 09/07/2073	गुरु 29/12/2082	शनि 21/07/2095	बुध 16/07/2112
राहु 27/08/2066	गुरु 08/11/2074	शनि 07/02/2084	बुध 07/02/2098	केतु 21/06/2113
गुरु 15/06/2067	शनि 08/06/2076	बुध 03/02/2085	केतु 25/02/2099	शुक्र 20/02/2116
शनि 27/05/2068	बुध 07/11/2077	केतु 03/07/2085	शुक्र 26/02/2102	सूर्य 09/12/2116
बुध 02/04/2069	केतु 09/06/2078	शुक्र 02/09/2086	सूर्य 21/01/2103	चंद्र 19/06/2117
केतु 08/08/2069	शुक्र 07/02/2080	सूर्य 08/01/2087	चंद्र 22/07/2104	00/00/0000
शुक्र 08/08/2070	सूर्य 08/08/2080	चंद्र 09/08/2087	मंगल 09/08/2105	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल गुरु 4 वर्ष 1 मा 4 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - शुक्र 02/01/2024 02/11/2026	बुध - सूर्य 02/11/2026 08/09/2027	बुध - चंद्र 08/09/2027 07/02/2029	बुध - मंगल 07/02/2029 04/02/2030	बुध - राहु 04/02/2030 23/08/2032
शुक्र 22/06/2024 सूर्य 13/08/2024 चंद्र 07/11/2024 मंगल 07/01/2025 राहु 11/06/2025 गुरु 27/10/2025 शनि 09/04/2026 बुध 02/09/2026 केतु 02/11/2026	सूर्य 17/11/2026 चंद्र 13/12/2026 मंगल 31/12/2026 राहु 16/02/2027 गुरु 29/03/2027 शनि 17/05/2027 बुध 30/06/2027 केतु 18/07/2027 शुक्र 08/09/2027	चंद्र 21/10/2027 मंगल 20/11/2027 राहु 06/02/2028 गुरु 15/04/2028 शनि 06/07/2028 बुध 17/09/2028 केतु 17/10/2028 शुक्र 12/01/2029 सूर्य 07/02/2029	मंगल 28/02/2029 राहु 23/04/2029 गुरु 10/06/2029 शनि 07/08/2029 बुध 27/09/2029 केतु 18/10/2029 शुक्र 17/12/2029 सूर्य 05/01/2030 चंद्र 04/02/2030	राहु 23/06/2030 गुरु 26/10/2030 शनि 22/03/2031 बुध 01/08/2031 केतु 24/09/2031 शुक्र 27/02/2032 सूर्य 13/04/2032 चंद्र 30/06/2032 मंगल 23/08/2032
बुध - गुरु 23/08/2032 29/11/2034	बुध - शनि 29/11/2034 08/08/2037	केतु - केतु 08/08/2037 04/01/2038	केतु - शुक्र 04/01/2038 06/03/2039	केतु - सूर्य 06/03/2039 12/07/2039
गुरु 11/12/2032 शनि 22/04/2033 बुध 17/08/2033 केतु 04/10/2033 शुक्र 19/02/2034 सूर्य 02/04/2034 चंद्र 10/06/2034 मंगल 28/07/2034 राहु 29/11/2034	शनि 04/05/2035 बुध 20/09/2035 केतु 16/11/2035 शुक्र 28/04/2036 सूर्य 16/06/2036 चंद्र 06/09/2036 मंगल 03/11/2036 राहु 30/03/2037 गुरु 08/08/2037	केतु 17/08/2037 शुक्र 11/09/2037 सूर्य 18/09/2037 चंद्र 01/10/2037 मंगल 09/10/2037 राहु 01/11/2037 गुरु 21/11/2037 शनि 14/12/2037 बुध 04/01/2038	शुक्र 16/03/2038 सूर्य 07/04/2038 चंद्र 12/05/2038 मंगल 06/06/2038 राहु 09/08/2038 गुरु 05/10/2038 शनि 11/12/2038 बुध 10/02/2039 केतु 06/03/2039	सूर्य 13/03/2039 चंद्र 23/03/2039 मंगल 31/03/2039 राहु 19/04/2039 गुरु 06/05/2039 शनि 26/05/2039 बुध 13/06/2039 केतु 21/06/2039 शुक्र 12/07/2039
केतु - चंद्र 12/07/2039 10/02/2040	केतु - मंगल 10/02/2040 08/07/2040	केतु - राहु 08/07/2040 27/07/2041	केतु - गुरु 27/07/2041 03/07/2042	केतु - शनि 03/07/2042 12/08/2043
चंद्र 30/07/2039 मंगल 11/08/2039 राहु 12/09/2039 गुरु 11/10/2039 शनि 14/11/2039 बुध 14/12/2039 केतु 26/12/2039 शुक्र 31/01/2040 सूर्य 10/02/2040	मंगल 19/02/2040 राहु 12/03/2040 गुरु 01/04/2040 शनि 25/04/2040 बुध 16/05/2040 केतु 25/05/2040 शुक्र 19/06/2040 सूर्य 26/06/2040 चंद्र 08/07/2040	राहु 04/09/2040 गुरु 25/10/2040 शनि 25/12/2040 बुध 17/02/2041 केतु 12/03/2041 शुक्र 14/05/2041 सूर्य 03/06/2041 चंद्र 05/07/2041 मंगल 27/07/2041	गुरु 10/09/2041 शनि 03/11/2041 बुध 22/12/2041 केतु 11/01/2042 शुक्र 08/03/2042 सूर्य 25/03/2042 चंद्र 23/04/2042 मंगल 13/05/2042 राहु 03/07/2042	शनि 05/09/2042 बुध 01/11/2042 केतु 25/11/2042 शुक्र 31/01/2043 सूर्य 21/02/2043 चंद्र 26/03/2043 मंगल 19/04/2043 राहु 19/06/2043 गुरु 12/08/2043

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

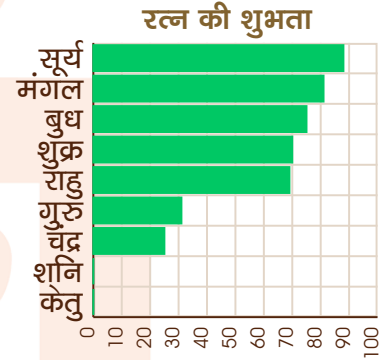
मूलांक	9
भाग्यांक	5
मित्र अंक	1, 3, 6, 9, 5
शत्रु अंक	4, 8
शुभ वर्ष	27,36,45,54,63
शुभ दिन	मंगल, रवि, गुरु
शुभ ग्रह	मंगल, सूर्य, गुरु
मित्र राशि	मकर, मिथुन
मित्र लग्न	वृश्चिक, मेष, मिथुन
अनुकूल देवता	लक्ष्मी
शुभ रत्न	माणिक्य
शुभ उपरत्न	लाल हकीक, लाल तुर्मली
भाग्य रत्न	मूंगा
शुभ धातु	ताम्र
शुभ रंग	नारंगी
शुभ दिशा	पूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मूंगा, केसर, रक्तचन्दन
दान अन्न	गेहूँ
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
माणिक्य	सूर्य	88%	धनार्जन, स्वास्थ्य
मूंगा	मंगल	81%	धन, भाग्योदय, सुख
पन्ना	बुध	75%	व्यावसायिक उन्नति, धनार्जन, धन
हीरा	शुक्र	70%	धनार्जन, व्यावसायिक उन्नति, पराक्रम
गोमेद	राहु	69%	धन, व्यावसायिक उन्नति
पुखराज	गुरु	31%	शत्रु व रोग, सन्तति कष्ट, दुर्घटना
मोती	चंद्र	25%	पराक्रम हानि, व्यय
नीलम	शनि	0%	दुर्घटना, शत्रु व रोग, दाम्पत्य कष्ट
लहसुनिया	केतु	0%	दुर्घटना, शत्रु व रोग



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
गुरु	08/08/2001	94%	38%	88%	62%	53%	58%	0%	69%	0%
शनि	08/08/2020	75%	0%	69%	81%	31%	77%	0%	75%	0%
बुध	08/08/2037	94%	0%	81%	88%	31%	77%	0%	69%	0%
केतु	08/08/2044	75%	0%	88%	75%	31%	77%	0%	57%	23%
शुक्र	08/08/2064	75%	0%	81%	81%	31%	83%	0%	75%	10%
सूर्य	08/08/2070	100%	38%	88%	75%	44%	58%	0%	57%	0%
चंद्र	08/08/2080	94%	50%	81%	81%	31%	70%	0%	57%	0%
मंगल	09/08/2087	94%	38%	94%	62%	44%	70%	0%	57%	10%
राहु	09/08/2105	75%	0%	69%	75%	31%	77%	0%	82%	0%

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	07/06/2000-23/07/2002 08/01/2003-07/04/2003	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	10/09/2009-15/11/2011 16/05/2012-04/08/2012	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	15/11/2011-16/05/2012 04/08/2012-02/11/2014	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	02/11/2014-26/01/2017 21/06/2017-26/10/2017	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	24/01/2020-29/04/2022 12/07/2022-17/01/2023	-----

द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	08/08/2029-05/10/2029 17/04/2030-31/05/2032	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	22/10/2038-05/04/2039 13/07/2039-28/01/2041 06/02/2041-26/09/2041	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	28/01/2041-06/02/2041 26/09/2041-11/12/2043 23/06/2044-30/08/2044	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	11/12/2043-23/06/2044 30/08/2044-08/12/2046	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	06/03/2049-10/07/2049 04/12/2049-25/02/2052	-----

तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	27/05/2059-11/07/2061 13/02/2062-07/03/2062	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	30/08/2068-04/11/2070	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	04/11/2070-05/02/2073 31/03/2073-23/10/2073	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	05/02/2073-31/03/2073 23/10/2073-16/01/2076 11/07/2076-11/10/2076	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	15/01/2079-12/04/2081 03/08/2081-07/01/2082	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

अष्टम स्थानस्थ ढैया
साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया

फल

शुभ
सम
शुभ
अशुभ
शुभ

क्षेत्र

व्यावसायिक उन्नति
धन
पराक्रम
सुख हानि
शत्रु व रोग मुक्ति

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपके जन्मकाल में मंगल की स्थिति चन्द्रकुंडली में द्वादश भाव में है अतः आप एक मांगलिक पुरुष हैं। चूंकि चन्द्र से मांगलिक होने का दोष अधिक प्रबल नहीं होता। अतः इसके प्रभाव से आपकी प्रवृत्ति किंचित व्ययशील रहेगी तथा शुभाशुभ कार्यों पर आप समय समय पर व्यय करते रहेंगे। जिससे आपको अल्प मात्रा में आर्थिक परेशानी हो सकती है लेकिन इसका प्रभाव अल्प रहेगा। तथा सामान्य रूप से धनार्जन होता रहेगा। शारीरिक स्वास्थ्य आपका मध्यम रहेगा। मानसिक परेशानी की अनुभूति आपको समय समय पर होती रहेगी। साथ ही सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में व्यवधान भी उत्पन्न होंगे लेकिन उनका सामना तथा समाधान करने में आप समर्थ रहेंगे। आपकी पत्नी का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु स्वभाव में किंचित उग्रता का भाव हो सकता है लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। आपका दाम्पत्य जीवन सुखी एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

मंगल के इस प्रभाव से आपके विवाह में किंचित विलम्ब हो सकता है परन्तु इस कार्य में सफलता आपको अवश्य प्राप्त होगा। साथ ही विवाह पूर्व किसी वार्ता में गतिरोध भी उत्पन्न हो सकता है लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। विवाह के पश्चात आपका दाम्पत्य जीवन परस्पर सामंजस्य के कारण अनुकूल रहेगा तथा इसका उचित उपभोग करने में आप समर्थ रहेंगे।

चन्द्रकुंडली में मंगल की द्वादश स्थिति के प्रभाव से आपकी प्रवृत्ति व्ययशील होगी परन्तु प्रचुर मात्रा में धनार्जन होने के कारण इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा साथ ही सांसारिक कार्यों में उत्पन्न व्यवधानों तथा समस्याओं का सामना तथा समाधान करने में भी आप सफल होंगे। तृतीय भाव पर मंगल की दृष्टि से भाई बहनों का सुख मध्यम रहेगा। पराक्रम तथा आत्मबल में वृद्धि होगी जिससे आपके लाभ एवं उन्नति के मार्ग हमेशा प्रशस्त रहेंगे। षष्ठ

भावस्थ मंगल की दृष्टि के प्रभाव से शत्रुवर्ग पर विजय प्राप्त करने में आपको सफलता मिलेगी। यदा कदा पित या गर्मी द्वारा उत्पन्न रोगों से आपको परेशानी का सामना करना पड़ेगा। सप्तम भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से पत्नी का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा स्वभाव में उग्रता भी रहेगी लेकिन परस्पर सामंजस्य के कारण आप सुखी दाम्पत्य जीवन का उपभोग करने में समर्थ रहेंगे।

इस प्रकार अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखी एवं आनन्दमय बनाने के लिए आपको किसी मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए। जिससे परस्पर मांगलिक दोष का प्रभाव समाप्त हो जाएगा। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक स्थानों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि या राहु सदृश पाप ग्रहों की स्थिति होनी चाहिए। ऐसा होने पर आपके सुख एवं सौभाग्य में वृद्धि होगी तथा धन ऐश्वर्य से युक्त होकर आनन्द पूर्वक आप अपने दाम्पत्य जीवन का उपभोग करेंगे तथा एक दूसरे को पूर्ण सुख एवं सहयोग भी प्रदान करेंगे।



कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- नवम् भाव के स्वामी पर शनि और राहु का प्रभाव है।
- पंचम् भाव का स्वामी नीच का होकर षष्ठ भाव में स्थित है।
- पंचम् भाव का स्वामी नीचस्थ है और उस पर राहु का प्रभाव है।

आपकी कुण्डली में मंगल और गुरु के कारण पितृदोष है।

आपकी कुण्डली में मंगल पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा क्रोधवश किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आपको नौकर, छोटे भाईयों को दान देना चाहिए।

आपकी कुण्डली में वृहस्पति पितृदोष कारक ग्रह है अतः दादाजी द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप विद्वानजनों, वृद्ध ब्राह्मण और पति को दान दें। विद्यालय में पुस्तकों का दान करें।

आपकी कुण्डली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो

आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

ग्यारहवें भाव में सूर्य हो तो जातक धनी, बलवान्, सुखी, स्वाभिमानी, तपस्वी, मितभाषी, सदाचारी, योगी, अल्पसन्तति एवं उदररोगी होता है।

मिथुन राशि में रवि हो तो जातक धनवान्, ज्योतिषी, इतिहास प्रेमी उदार, विवेकी, विद्वान्, बुद्धिमान, मधुरभाषी, नम्र एवं प्रेमी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य एकादश भाव में स्थित है अतः आप पिता के हमेशा प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा सामान्य रूप से वे शारीरिक व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। धनैश्वर्य एवं सम्मान से वे हमेशा युक्त रहेंगे एवं जीवन में आपको सर्वप्रकार के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आपके धनार्जन के साधनों की उन्नति में भी वे आपको प्रायः सहयोग तथा निर्देश प्रदान करते रहेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे तथा यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे। आप जीवन में उनको हमेशा वांछित सहयोग तथा सहायता प्रदान करते रहेंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्टानुभूति नहीं होने देंगे।

चन्द्र

तृतीय, भाव में चन्द्रमा हो तो जातक आस्तिक, तपस्वी, प्रसन्नचित्त, कफरोगी, मधुरभाषी प्रेमी, भाईयों और बहिनों का रक्षक, साहसी, विद्वान्, एवं कंजूस होता है।

तुला राशि में चन्द्रमा हो तो जातक दीर्घदेही, आस्तिक, अन्नदाता, धनवान्, जमींदार, कुशाबुद्धिवाला, चतुर, उच्चाकांक्षाओं से रहित, सन्तोषी एवं परोपकारी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति तृतीय भाव में है। अतः माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। आपके प्रति उनका पूर्ण अपनत्व तथा स्नेह का भाव रहेगा एवं जीवन में सर्वप्रकार से आपकी सहायता करने के लिए वे नित्य तत्पर रहेंगी। साथ ही शक्ति, साहस एवं पराक्रम में आपकी वृद्धि में वे सदैव सहायक रहेंगी। इसके अतिरिक्त वे आपको समय समय पर अच्छा भोजन खिलाने के लिए भी तत्पर रहेंगी।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान तथा श्रद्धा का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा पालन के लिए प्रायः तत्पर रहेंगे। साथ ही यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे परन्तु इससे आपके मधुर संबंधों में कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में उनकी पूर्ण सेवा तथा आर्थिक सहायता तथा अन्य प्रकार का सहयोग करने के लिए तत्पर रहेंगे एवं उन्हें किसी भी प्रकार असुविधा नहीं होने देंगे। इसके लिए आप सर्वदा प्रयत्नशील रहेंगे।

मंगल

द्वितीय भाव में मंगल हो तो जातक कटुभाषी, नेत्रकर्ण रोगी, कटुतिक्त रसप्रिय, धर्मप्रेमी, चोर से भक्ति, कुटुम्ब क्लेश वाला, पशुपालक, निर्बुद्धि एवं निर्धन होता है।

कन्या राशि में मंगल हो तो जातक सुखी, शिल्पज्ञ, पापभीरु, लोकमान्य एवं व्यवहार कुशल होता है।

आप के जन्म काल में मंगल द्वितीय भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा वे शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति भी करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव विद्यमान रहेगा। धनार्जन एवं विद्यार्जन संबंधी कार्यों में वे आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही जीवन में अन्य महत्वपूर्ण एवं शुभ कार्यों में भी आपको उनका पूर्ण सहयोग एवं सद्भाव प्राप्त होगा।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह की भावना रहेगी। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा उनमें आपसी मतभेदों के कारण अनिश्चित काल के लिए कटुता या तनाव का वातावरण होगा। जीवन में आप हमेशा भाई बहिनों का सुख दुःख में ध्यान रखेंगे तथा अपनी ओर से हमेशा उन्हें पूर्ण आर्थिक एवं अन्य रूप में सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

बुध

दशमभाव में बुध हो तो जातक सत्यवादी, मनस्वी, व्यवहार कुशल, लोकमान्य, विद्वान, लेखक, कवि जमींदार, मातृ-पितृ भक्त, राजमान्य, न्यायी एवं भाग्यवान् होता है।

वृष राशि में बुध हो तो जातक कुशाबुद्धिवाला, उच्चपद पर आसीन, सुगठित शरीर, दिखावा पसन्द करने वाला, शास्त्रज्ञ, व्यायामप्रिय, धनवान्, गम्भीर, मधुरभाषी, विलासी एवं रतिशास्त्रज्ञ होता है।

गुरु

षष्ठभाव में गुरु हो तो जातक विवेकी, प्रसिद्ध, ज्योतिषी, विद्वान् सुकर्मरत, दुर्बल, उदार, प्रतापी, नीरोगी, लोकमान्य, बहुत कमशत्रु एवं मधुरभाषी होता है।

मकर राशि में गुरु हो तो जातक प्रवासी, द्रव्यहीन, व्यर्थपरिश्रमी, चंचलचित्त, धूर्त, असभ्य आचरण, दुःखी एवं ईर्ष्यालु होता है।

शुक्र

ग्यारहवें भाव में शुक्र हो तो जातक परोपकारी, लोकप्रिय, जौहरी, विलासी, वाहनसुखी, स्थिरलक्ष्मीवान्, धनवान् गुणज्ञ, कामी एवं पुत्रवान् होता है।

मिथुन राशि में शुक्र हो तो जातक कवि, साहित्यिक, चित्रकला निपुण, साहित्यिक

स्रष्टा, प्रेमी, सज्जन, लोकहितैषी धनी, उदार, सम्मानित, कुशाबुद्धि, विद्वान् एवं परस्त्रियों में रुचि रखने वाला होता है।

शनि

अष्टम भाव में शनि हो तो जातक विद्वान् स्थूलशरीर, उदार प्रकृति, कपटी, गुप्तरोगी, वाचाल, डरपोक, कुष्ठरोगी एवं धूर्त होता है।

मीन राशि में शनि हो तो जातक अविचारी, शिल्पकार हतोत्साही, धनी, प्रसिद्ध, सुखी एवं दूसरों की सहायता करने वाला होता है।

राहु

द्वितीय भाव में राहु हो तो जातक संहशील, अल्पधनवान्, कठोरभाषी, कुटुम्बहीन, अल्पसन्तति, मात्सर्ययुक्त एवं परदेशगामी होता है।

कन्या राशि में राहु हो तो जातक लोकप्रिय, मधुरभाषी, कविलेखक, गवैया एवं धनी होता है।

केतु

अष्टम भाव में केतु हो तो जातक दुर्बुद्धि, स्त्रीद्वेषी, चालाक, दुष्टजनसेवी, तेजहीन, नीच, स्त्री की कुण्डली में पति के लिए अशुभ एवं अल्पायु होता है।

मीन राशि में केतु हो तो जातक परिश्रमी, धार्मिक प्रवृत्तिवाला, कर्णरोगी, प्रवासी, चंचल और कार्यपरायण होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- बुध
(08/08/2020 - 08/08/2037)

बुध की महादशा 08/08/2020 को आरम्भ होगी और 17 वर्ष की होकर 08/08/2037 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में बुध दशम भाव में स्थित है। बुध की दृष्टि चतुर्थ भाव पर है। इसके पूर्व आपकी 19 वर्ष की शनि दशा चल रही थी। शनि के कारण सन्तान से सुख और शत्रु पर विजय मिली होगी तथा कार्य स्थान में स्थिति अनुकूल रही होगी। बुध की इस दशा में आप को यश तथा ख्याति मिलेगी, जीवन में प्रगति होगी, सम्मान और उत्तम शिक्षा मिलेगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य अति उत्तम रहेगा। आपमें भरपूर शक्ति, उत्साह तथा क्रियाशीलता रहेगी। मौसम में परिवर्तन के कारण हल्का ज्वर, विषाणु जन्य संक्रामक बीमारी, त्वचा रोग तथा स्नायविक दुर्बलता हो सकती है। अधिक मानसिक तथा शारीरिक श्रम से बचे।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति अत्यन्त सुदृढ़ होगी। व्यवसाय तथा व्यापार से आय में वृद्धि होगी। जमीन-जायदाद से भी आय में वृद्धि होगी। आपको माता-पिता से लाभ मिल सकता है। सट्टे में लेन-देन लाभदायक होगा। जीविकोपार्जन के लिए लेखा, पत्रकारिता, शिक्षण, अन्तरिक्ष अनुसन्धान तथा सभी बौद्धिक कार्यों का चयन कर सकते हैं। सूती कपड़ा, रत्न, पुस्तक, लेखन सामग्री, कम्प्यूटर तथा हाथ से बने सामानों का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों को सम्मान मिलेगा, आय में वृद्धि होगी तथा वरिष्ठ कर्मचारियों और उच्चाधिकारियों का अनुग्रह प्राप्त होगा। कार्य-स्थान में स्थिति अनुकूल होगी और अधीनस्थ कर्मचारियों तथा सहकर्मियों से सहयोग मिलेगा। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों की आय तथा लाभ में वृद्धि होगी। व्यापार में विस्तार तथा व्यवसायियों के कार्य-क्षेत्र में वृद्धि होगी। आर्थिक तथा व्यावसायिक समृद्धि के लिए यह दशा उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

गुरु की अन्तर्दशा में आपको जीवन का सुख मिलेगा। जमीन-जायदाद से संबंधित लेन-देन लाभदायक होगा। चल-अचल सम्पत्ति से लाभ मिलेगा। वाहन सुख भी मिलेगा। मंगल की अन्तर्दशा में छोटी यात्रा तथा सूर्य की अन्तर्दशा में दूर की यात्रा होगी। कार्य के सिलसिले में यात्रा हो सकती है।

शिक्षा :

आपकी शिक्षा अति उत्तम होगी। आपकी शैक्षिक उपलब्धि आपकी जीविका की संभावना में वृद्धि करेगी। विज्ञान, लेखा, वाणिज्य, साहित्य तथा व्यापार के विषय में आपकी रुचि होगी। आप प्रतिभाशाली, कूटनीतिक तथा बहुमुखी हैं और विभिन्न विषयों में आपकी रुचि

है। आपका दिमाग विवेक पूर्ण व विश्लेषणात्मक है और आप सभी बौद्धिक कार्यों में अच्छा करेंगे।

परिवार :

आपको बच्चों से सुख मिलेगा। आपका उनके साथ सम्बन्ध बहुत अच्छा रहेगा। आपके जीवन साथी की अचल सम्पत्ति में वृद्धि होगी, उनके अनेक मित्र होंगे और सुख की प्राप्ति होगी। आपका जीवन साथी के साथ सम्बन्ध उत्तम रहेगा। आपकी माता की विदेश यात्रा, साझेदारों से लाभ तथा आध्यात्मिक कार्यों में रुचि होगी। आपके पिता का धन-संग्रह और सुख की प्राप्ति होगी। आपके छोटे भाई-बहनों के कार्य में शुभ परिवर्तन और अचानक लाभ मिलेगा जबकि बड़ों का शुभ उद्देश्य के लिए व्यय होगा। आपका उनके साथ सम्बन्ध अति उत्तम रहेगा। इस दशा के दौरान आपको यश, सम्मान तथा सफलता मिलेगी।

अन्तर्दशा :

बुध की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको व्यवसाय में सफलता, यश और ख्याति मिलेगी। केतु कुछ समस्याएं उत्पन्न कर सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा में धन और समृद्धि की प्राप्ति होगी जबकि सूर्य को अन्तर्दशा में व्यय तथा यात्रा होगी। चन्द्र की अन्तर्दशा के कारण हर प्रकार का लाभ मिलेगा। मंगल की अन्तर्दशा के दौरान छोटी यात्रा और कुछ बाधाएं हो सकती हैं। राहु की अन्तर्दशा में कुछ बाधाएं उत्पन्न हो सकती हैं। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान सुख और साझेदारों से लाभ मिलेगा जबकि शनि की अन्तर्दशा के फलस्वरूप बच्चों से सुख मिलेगा।

**अंतर्दशा :- बुध - शुक्र
(02/01/2024 - 02/11/2026)**

आपके लिए बुध की महादशा 08/08/2020 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में तीसरी अंतर्दशा शुक्र की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 10 मास होगी। आपके लिए यह 02/01/2024 को प्रारंभ होकर 02/11/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शुक्र सौंदर्य, शांति और समृद्धि का कारक है।

इस अवधि में आप कार्यक्षेत्र में सफल रहेंगे। उच्चपद और सम्मान प्राप्त होंगे। सट्टेबाजी या निवेश से लाभ हो सकता है। आप धनी बनेंगे, खुद का मकान और वाहन हो सकते हैं। किस्मत साथ देगी। सुअवसर खूब मिलेंगे। कला में रुचि होगी। सब सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे। शिक्षा उत्तम होगी। घरेलू सुख होगा।

आपके जीवनसाथी भाग्यशाली रहेंगे, धनी बनेंगे, खुश रहेंगे और उच्चपद प्राप्त करेंगे। आपके पिता प्रसन्न और समृद्ध होंगे। माता के जीवन में कुछ परिवर्तन आ सकता है, अचानक धनागम होगा, सुख के साधन क्रय करेंगी। आपके भाई-बहनों के लिए यात्रा, पिता से मधुर संबंध, खुशी, धन, कला में रुचि, सौभाग्य, घर और कार्यालय में सुखद वातावरण और सुखी जीवन का संकेत है।

आपकी संतान को कार्यों में सफलता मिलेगी, परिश्रम से लाभ होगा। अगर वे कार्यरत हैं तो साझेदारी से लाभ होगा, व्यापार में फायदा होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय में प्रसन्नता व्याप्त रहेगी, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं को विभिन्न माध्यमों से लाभ होगा। व्यापारी सौभाग्यशाली रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। कानों में मामूली व्याधि हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए लक्ष्मीजी की आराधना करें।

**अंतर्दशा :- बुध - सूर्य
(02/11/2026 - 08/09/2027)**

आपके लिए बुध की महादशा 08/08/2020 को प्रारंभ हुई थी। इसमें चौथी अंतर्दशा सूर्य की होगी जिसकी अवधि 10 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 02/11/2026 को प्रारंभ होकर 08/09/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य स्वास्थ्य, ऊर्जा और आत्मा का कारक है।

इस अवधि में आप उच्चपद और सम्मान प्राप्त करेंगे। सफलता और समृद्धि का योग है। घरेलू सुख मिलेगा। बड़े भाई-बहनों से मधुर संबंध रहेंगे। महत्वपूर्ण व्यक्तियों से मित्रता हो सकती है। संतान से सुख मिलेगा। निवेश और सट्टेबाजी से लाभ हो सकता है। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शिक्षा उत्तम रहेगी, अध्यात्म में रुचि हो सकती है।

आपके जीवनसाथी को भागीदारी से लाभ होगा, इच्छाएं पूर्ण होंगी, व्यापार में लाभ

होगा, यात्रा हो सकती है। आपके पिता को धनार्जन होगा, सुख-सुविधाएं उपलब्ध रहेंगी, साहित्य से लाभ हो सकता है। माता को अचानक धन मिल सकता है, अध्यात्म में रुचि होगी, अचानक कोई घटना घट सकती है।

आपके भाई-बहन भाग्यशाली रहेंगे, धन, पिता से लाभ, धर्म में रुचि, सफलता, प्रगति, उच्चाधिकारियों की प्रसन्नता, सम्मान और उच्चपद का योग है।

आपकी संतान को सफलता मिलेगी, इच्छाएं पूर्ण होंगी, शिक्षा में प्रगति होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो वांछित स्थान पर तबादला हो सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो आय में वृद्धि होगी। परामर्शदाताओं को धनलाभ होगा। व्यापारी खूब पैसा कमाएंगे। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। कानों और नेत्रों में मामूली व्याधि हो सकती है।

**अंतर्दशा :- बुध - चन्द्र
(08/09/2027 - 07/02/2029)**

आपकी बुध की महादशा 08/08/2020 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में पांचवी अंतर्दशा चंद्रमा की होगी, जिसकी अवधि 1 वर्ष 5 मास होगी। आपके लिए यह 08/09/2027 को प्रारंभ होकर 07/02/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र माता, सरकारी कृपा और चेहरे की चमक का कारक है।

इस अवधि में आप प्रसन्न रहेंगे। सक्रियता बढ़ेगी। कला, साहित्य, संचार साधनों में सफलता मिल सकती है। सामाजिक जीवन उत्तम रहेगा; बहुत से मित्र होंगे। माता-पिता से लाभ हो सकता है। समाजसेवी संस्था की स्थापना में सक्रिय हो सकते हैं। दूरस्थ स्थान से संपर्क से लाभ होगा। संतान से सुख मिलेगा।

आपके जीवनसाथी भाग्यशाली रहेंगे और धनी बनेंगे। आपके पिता को साझेदारी से लाभ होगा, कार्यक्षेत्र में सफलता मिलेगी। माता के खर्चे बढ़ सकते हैं, यात्राएं होंगी, अध्यात्म में रुचि लेंगी।

आपके भाई-बहनों का स्वास्थ्य उत्तम होगा, धन, संतान से प्रसन्नता, उत्तम शिक्षा का संकेत है। शिशु का जन्म हो सकता है। आपकी संतान की आकांक्षाएं पूर्ण होंगी, शिक्षा में सफल होंगे। अगर वे सेवारत हैं तो उच्चपद, सरकार से लाभ और धन का योग है।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यक्षेत्र में सफल रहेंगे। परामर्शदाता धन कमाएंगे ; उच्चपद पर आसीन होंगे। व्यापारी भाग्यशाली रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। गले में मामूली शिकायत हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए भैरव मंदिर में दूध अर्पित करें।

**अंतर्दशा :- बुध - मंगल
(07/02/2029 - 04/02/2030)**

आपके लिए बुध की महादशा 08/08/2020 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में छठी अंतर्दशा मंगल की होगी जिसकी अवधि 11 मास 27 दिन रहेगी। यह 07/02/2029 को प्रारंभ होकर 04/02/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल साहस, महत्वाकांक्षा और आत्मविश्वास का कारक है।

इस अवधि में आप धन कमाएंगे। कटु वचन बोलने से बचें। घरेलू सुख उत्तम रहेगा। कार्यक्षमता उत्तम रहेगी। विरासत द्वारा या साझेदार से लाभ हो सकता है। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। यात्रा, सफलता, प्रसिद्धि, उत्साह द्वारा लक्ष्य प्राप्ति का संकेत है। जायदाद के मालिक बन सकते हैं।

अध्यात्म क्षेत्र में उत्तम, सकारात्मक कार्य कर सकते हैं। समाज में प्रभाव बढ़ेगा। प्रोन्नति और वांछित स्थान पर तबादला संभव है। शत्रुओं पर विजय होगी।

आपके जीवनसाथी अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं। आपके पिता शक्तिशाली और सफल बनेंगे। माता धनी और सफल होंगी, निवेश से लाभ होगा।

आपके भाई-बहनों के खर्च बढ़ सकते हैं, सफलता में बाधा, अचल संपत्ति की खरीद, उत्तम शिक्षा के संकेत हैं। आपकी संतान सफलता प्राप्त करेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो प्रसिद्धि, सफलता और उच्चपद प्राप्त करेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो सौभाग्यशाली रहेंगे। परामर्शदाताओं की आय बढ़ेगी। व्यापारियों के कार्य में परिवर्तन हो सकता है।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। छोटी-मोटी व्याधि हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए हनुमान चालीसा का पाठ करें।

**अंतर्दशा :- बुध - राहु
(04/02/2030 - 23/08/2032)**

आपके लिए बुध की महादशा 08/08/2020 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा राहु की होगी, जिसकी अवधि 2 वर्ष 6 मास 18 दिन रहेगी। आपके लिए यह 04/02/2030 को प्रारंभ होकर 23/08/2032 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक समृद्धि और अचानक, अप्रत्याशित घटनाओं का कारक है।

इस अवधि में आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार हो सकता है। भौतिक सुख-साधन उपलब्ध होंगे। प्रभावशाली व्यक्तियों से संपर्क होगा, उनसे सहायता मिलेगी। समृद्धि का वातावरण रहेगा। कटु वचन बोलने से बचें। साझेदार के माध्यम से धनागम हो सकता है। तंत्र-मंत्र में रुचि हो सकती है, यात्रा संभव है। अचानक, अप्रत्याशित घटना घट सकती है।

आपके जीवनसाथी को साझेदार के माध्यम से या यात्राओं से लाभ हो सकता है।

आपके पिता स्पर्धियों पर विजय प्राप्त करेंगे, सम्मान बढ़ेगा, धनागम होगा और स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। माता धनी बनेंगी। आपके भाई-बहनों के लिए विदेश में निवास, अचल संपत्ति की प्राप्ति, उत्तम शिक्षा और माता से लाभ का संकेत है।

आपकी संतान का ज्ञानार्जन उत्तम होगा, प्रसिद्ध बनेंगे और परीक्षा में सफल होंगे। अगर वे कार्यरत हैं तो कार्यक्षेत्र में तरक्की करेंगे, प्रसिद्ध होंगे, धन का लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो प्रसिद्ध होंगे, आय में वृद्धि होगी, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाता स्पर्धियों पर विजयी होंगे। व्यापारी भाग्यशाली रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए राहु मंत्र का जाप करें।

ॐ रां राहवे नमः

